राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनोहिल्स,दोइमुख, अरुणाचल प्रदेश

हिंदी विभाग

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में शोध की सम्भावनाएँ

पांच दिवसीय ऑनलाइनशिक्षण विकास कार्यक्रम (FDP)

01-05 जून, 2020

1. आयोजक मण्डल :

मुख्य संरक्षक : प्रो. साकेत कुशवाहा, कुलपति, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर

संरक्षक :

- प्रो. अमिताव मित्रा, सम-कुलपति, राजीव गाँधी विश्विविद्यालय
- प्रो. तोमो रिबा, कुलसचिव, राजीव गाँधी विश्वाविद्यालय

विभागीय आयोजन समीति :

- डॉ. श्याम शंकर सिंह, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
- डॉ. जमुना बीनी तादर, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- डॉ. राजीव रंजन प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

सलाहकार समीति :

- डॉ. प्रचंड नारायण पिराजी, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
- डॉ. चन्दन कुमार पांडा, सहायक प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग

संयोजक :

- प्रो. ओकेन लेगो, भाषा संकायाध्यक्ष

सह-संयोजक :

- डॉ. जोराम यालाम नाबाम, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
- डॉ. सत्य प्रकाश पाल, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

2. दो दिवसीय वेबिनार :

2.1 **संकल्पना बिंदु :** हिन्दी का मध्यकालीनसाहित्य अपार लोकप्रियता प्राप्तसाहित्य है। इस साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि जितना यह साहित्यिकों में समादृत हुआ, उससे कहीं अधिकलोक में स्वीकृत हुआ।

मध्यकालीनहिन्दीसाहित्य पर प्रभूत शोध कार्य हुए हैं, विपुल मात्रा में विविध आयामी आलोचनाएँ प्रकाशित हुई हैं तथापि युगीन सन्दर्भों में तथा नवन्नव जानकारियों के आलोक में इस पर अध्ययन, मनन, लेखन की सम्भावनाएँ बनती रहती हैं तथा शोध की नयी दिशाएँ उजागर होती रहती हैं। भक्तिकाल और रीतिकाल दोनों कालों के साहित्य में शोध की अनेक सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। भक्तिकालीनसाहित्य का जो प्रचलित वर्गीकरण है, उससे इतर सोचने की काफी गुंजाइश है। सामान्यत: निर्गुण-सगुण का भेद कर उसको ज्ञानमार्ग-प्रेममार्ग में बाँटकर देखा जाता है। परन्तु इन खांचों के अन्दर बैठे कवि कुछ अन्यदृष्टियों से एक-दूसरे वर्ग के कवियों के निकट आते तथा अपने वर्ग के कवियों से दूर जाते हुए दिखते हैं। जैसे कबीर और तुलसी को ही लें । दोनों के यहाँ 'राम भक्ति' समान तत्व हैं। दोनों के काव्य की सामाजिक सम्पृक्तताउन्हें एक ही सम पर खड़ा करती है। यहाँ तक कि निर्गुण-सगुण के बँटवारे से परे जाकर देखें तो कबीर के निर्गुण राम के, गोविन्द, माधव, हरि, गोपाल आदि अनेक नाम है वहीं तुलसी भी अपने राम के साथ उन समस्त कार्यों को गिना देते हैं जो कृष्ण, नृसिंह, विष्णु आदि अनेक रूपों में उन्होंनेकिये हैं। ब्रह्म, माया, जीवजगत आदि के सम्बन्ध में तुलसी और कबीर के काफी विचार मिलते-जुलते हैं, एक सीमा पर पहुँचकर जहाँ कबीर सभी मत-मतान्तरों, साधनाओं को नकारते हैं, वहीं तुलसी भी 'तुलसिदासपरिहरइ तीन भ्रम' कहकर उसी भावभूमि पर खड़े दिखायी देते हैं। स्त्री–सम्बन्धी दृष्टिकोण तो प्राय: पूरे भक्ति साहित्य का एक ही सा है। कबीर के यहाँ ईश्वर को पाने का प्रेम एकमेव आधार है तो तुलसी के यहाँ भी वही प्रबल आधार है– 'रामहि केवल प्रेम पियारा। सुमिरिसुमिरिउतरहिं नर पारा।' इस तरह की अन्य बहुत सी बातें बहुत से कवियों के काव्य में प्राप्त होती है जिसके कारण भक्ति-साहित्य पर शोध की सम्भावनाओं के नवीन द्वार खुलते हैं। जैसे मुस्लिम भक्त कवियों के काव्य पर तो कुछ विचार हुआ है, परन्तु मुस्लिम कवियों की भक्ति-चेतना तथा हिन्दू कवियों की भक्ति चेतना समान है या उसमें कुछ अन्तर भी है, इस पर विचार होना अभी शेष है। इसी प्रकार रीतिबद्ध कवियों की भी पारस्परिक तुलना की जाती है और रीति मुक्त कवियों की भी। परन्तुरीतिबद्ध कवियों एवं रीतिमुक्त कवियों के बीच तुलनात्मकअध्ययन की सम्भावना शेष है। इसी तरह के अन्य बहुत से क्षेत्र हैं।

2.1 विषय/उप-विषय :

उच्चक शिक्षा में उत्कृष्ट शोध उसकी उन्नतति व गुणवत्ताक के आधार हैं। शोध के लिये अच्छे विषय का चुनाव अच्छेध शोध का मार्ग प्रशस्ति करता है। अत: मध्यकालीनसाहित्यप के उन विषयों पर विद्वानों की चर्चा से प्राध्याहपकगण लाभान्वित होंगे जिन पर अभी तक या तो ध्याधन गया नहीं है या कम गया है या फिर शोध कार्य हुआ भी है तो वह सन्तुशष्टिदायक नहीं है। इसी विचार से उक्ता विषय को शिक्षण विकास कार्यक्रम के लिये निर्धारित करने की योजना है। व्याहख्यागन के लिये निश्चित किये गये विषय इस प्रकार रहेंगे –

- सामाजिक परिप्रेक्ष्य और भक्तिकालीन साहित्य
- जाति का प्रश्न और भक्ति-साहित्य
- रीतिबद्ध और रीतिमुक्तकाव्य के शृंगार में अन्तर
- रीतिकाल का रीतीतर काव्य
- भक्तिकालीन कवि : कौन भक्त कौन सन्त
- अधुनातन विमर्श एवं मध्यकालीनकाव्य
- भक्तिकाव्य और भक्ति : निर्गुण-सगुण से परे तहाँ हमारो ध्यान
- मध्यकालीनकाव्य : शृंगार में भक्ति एवं भक्ति में शृंगार
- हिन्दीतर प्रान्तीय भक्ति-साहित्य एवं हिन्दी भक्ति साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन की दिशाएँ

- 'पदमावत' की प्रासंगिकता
- हिन्दीभक्ति-साहित्य में स्त्री-दृष्टि
- रीतिकालीनकाव्य शृंगार में भक्ति एवं भक्ति में शृंगार
- रीतिकालीन साहित्य में जनजीवन
- मध्यकालीन हिन्दी साहित्य : वर्गीकरण का प्रश्न
- मध्यकालीन काव्य में प्रेम : बोध एवं वैशिष्ट्य

2.2 **विषय-विशेषज्ञ :**

- प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय**,** कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री-राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली
- प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री**,** कुलपति,हिमाचल केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश
- प्रो. रामसजनपाण्डेय, कुलपति, बाबा मस्तनाथविश्वविद्यालय,अस्तलबोहर, रोहतक, हरियाणा
- प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
- प्रो. कुमुद शर्मा, निदेशक, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्लीविश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. राजनारायन शुक्ल, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान, लखनऊ
- प्रो. एम. वेंकटेश्वर, इफ्लू, हैदराबाद
- प्रो. चंदन कुमार**,** प्रोफेसर, दिल्लीविश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रो. मनोज कुमार सिंह , प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. रामेश्वर मिश्र, प्रोफेसर, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, प. बंगाल
- प्रो. सदानन्दगुप्त, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ

2.3 आयोजन सहयोग : राजीव गाँधी विश्वविद्यालय

2.4 सहयोग राशि : बीस हजार रुपए